REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.2331 (UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 7 | ISSUE - 7 | APRIL - 2018

सामाजिक व्यवस्था का सुत्रधार स्वरूप : रामायण

संतोष सिंह
हिन्दी प्रवक्ता , छज्जू राम जाट कॉलेज , हिसार.

परिचय

रामायण का समय त्रेतायुग का माना जाता है। भारतीय कालगणना के अनुसार समय को चार युगों में बाँटा गया है- सतयुग, त्रेतायुग, द्वापर युग एव कलियुग। एक कलियुग 4,32,000 वर्ष का, द्वापर 8,64,000 वर्ष का, त्रेता युग 12,96,000 वर्ष का तथा सतयुग 17,28,000 वर्ष का होता है। इस गणना के अनुसार रामायण का समय न्यूनतम 8,70,000 वर्ष (वर्तमान कलियुग के 5,250 वर्ष + बीते द्वापर युग के 8,64,000 वर्ष) सिद्ध होता है । बहुत से विद्वान इसका तात्पर्य इसा पू. 8000 से लगाते है जो आधारहीन है। अन्य विद्वान इसे इससे भी पुराना मानते हैं।

भूमिका

करुणार्दचित्त महर्षि बाल्मीकि के मानस सागर से निसृ तरामायण रूपी ज्ञान गंगा मे मानवीय सभ्यता के सभी पक्षो का उदात्त चित्रण इसमे समाविष्ट है इस ज्ञान विज्ञान कि सरिता मे अवगाहन कर कोई भी सभ्यता अपनी, आत्मिक बौद्धिक एवं मानसिक मलिनता को दूर कर सकता है। किसी सभा समुदाय या समाज मे उठने बैठने तथा रहने योग्य मनुष्य को सभ्य कहा जाता है उसी के भाव को सभ्यता कहते है।

सभ्यता हमारा बाह्य रहन सहन, खान पान, आचरण भौतिक विकास पारिवारिक सामाजिक संस्कार आदि का परिचायक होता है । संस्कृति हमारी आंतरिक सोच ज्ञान विज्ञान आदि प्रेरक तत्व को बताती है। वैसे आंतरिक ही बाह्य आचरण का कारण होता है । रामायण मानव सभ्यता के विकास मे परम सहयोगी है तथा सदा सर्वदा रहेगी। रामायण के बारे मे कहा गया है कि –यावत् स्थास्यन्ति गिरयः सरितश्च महीतले। तावत् रामायणकथा लोकेषु प्रचरिष्यति ॥ काव्य का प्रयोजन होता है – रामादिवत् प्रवर्तितव्यं न रावणादिवत।

रामायण कालीन सामाजिक व्यवस्था

प्रत्येक व्यक्ति अपने ज्ञान एवं विचार के अनुरूप हि आचरण करता है . और जैसे करता है वैसा हि बन जाता है. जीवन का यही सूत्र है । महर्षि वाल्मीकि ने रामचरित्र के माध्यम से मानव जीवन या मानव सभ्यता के विकास मे अपेक्षित सभी गुणो की आवश्यकताओ की चर्चा की है, जिसकी विश्व के प्रत्येक सभ्यता को सदा आवश्यकता रहेगी । आइये कुछ बिन्दुओ पर विचार करते है :----------

रामायण मे वर्णित रामराज्य की सभी प्रजा वेदज्ञ थी ज्ञान सम्पन्न शूरवीर संसार के कल्याण मे संलग्न तथा समस्त मानवीय गुणो जैसे दया, सत्यपरता, पवित्रता, उदारता आदि से युक्त थे.....सर्वे वेदविदः शूराःसर्वे लोकहिते रताः सर्वे ज्ञानोपसम्पन्नाःसमुदिता गुणैः(बालकाण्ड,बाल्मिकीय रामायण 18/25)

समाज मे सभी वर्ण (ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य तथा शुद्र) एक दुसरे क सहयोग करते हुये रहते थे जाति भेद य वर्ण भेद कि दूषित भावना नही थी तथा सभी को समान अधिकार तथा न्याय प्राप्त होता था। :---------ब्रह्मक्षत्रमहिसन्तस्ते कोशं संपूरयन् सुतीक्ष्णदण्डाः संप्रेक्ष्य पुरुषस्या बलाबलम्...

रामायण एक ऐसे सभ्य समाज के निर्माण को संदेश देता है जिस समाज मे धार्मिक न्याय प्रिय राजाओ के सुशासन मे संपुर्ण समाज धन धान्य से युक्त हो। सभी गौ आदि पशुओ से समृ ध, अश्वादि आशुगामी वाहनो से युक्त तथा कोइ भी निर्धन नही हो। आधुनिक सभ्यता मे हम लोग अंध विकास मे आगे दौड़ रहे है जहां सम्पूर्ण विश्व विकास के नाम पर विनाश की तरफ बढ़ रहा है । औद्योगिक विकास यान वाहनों के प्रदूषण से प्रकृति को नष्ट करने तुले हुये है। रामायण के अनुसार धन धान्य-समृ द्धि का मूल गौमाता है । वेद मे भी कहा गया है है कि ---

"धेनुः सदनं रयीणाम्" गाय सर्वविध धन समृद्धिकी खान है।

प्राकृतिक एवं शुद्ध गौ वंश की रक्षा कर हम मानव सभ्यता को स्वस्थ एवं दीर्घायु कर सकते है। तथा अश्व युक्त वाहनों और तत्कालीन बिना ई धनसे उड़ने वाले हवाई जहाजों(पुष्पक विमान) की खोज कर उनके प्रयोग से विश्व पर्यावरण को प्रदूषण मुक्त कर सकते है। रामायण कालीन सभ्यता का वर्णन करते हुये बाल्मीकि मुनि जी कहते है –कि अयोध्या नगरी मे कोई नर नारी कामी, कंदर्प , निष्ठुर, मूर्ख (अविद्वान) और नास्तिक नहीं था। सभी नर नारी धार्मिक , जितेंद्रिय महर्षियों के समान सच्चरित्र एवं शालिन थे। सभी लोग नित्य अग्निहोत्र करते थे।

कोई क्षुद्र-वृत्ति वाला या चोर नहीं था। सभी अंहिसा यम नियमो का पालन करते और दानी थे। कोई भी व्यक्ति पागल तनावग्रस्त या व्यथित चित्त वाला नहीं था। सभी पुत्र पौत्र सहित आनंद पूर्वक दीर्घायु जीवन व्यतीत करते थे। इस प्रकार तत्कालीन सभ्यता का चित्रण हमे उस तरह का एक समृद्ध, ज्ञानवान , शीलवान तथा धार्मिक मानव सभ्यता की महत्ता को बताता है। आज उस का अनुसरण कर अपनी विकृत सामाजिक व्यवस्था को दूर कर एक सभ्य समाज का निर्माण किया जा सकता है।

संस्कार

एक सभ्य मनुष्य एवं समाज तथा विश्व के निर्माण के लिए सोलह संस्कारों (गर्भाधान से लेकर अन्त्येष्टि पर्यंत) की मानव जीवन में अत्यंत महत्ता है। जिन कर्मो से मानव जीवन मे हम लोग उत्कृष्ट गुणोंका आधान कर सके उसे संस्कार कहते है। वैदिक गृह्य सूत्रोंमे इनका विस्तार से वर्णन मिलता है। यदि हम मनुष्य को श्रेष्ठ बनाना चाहते है तो प्रत्येक व्यक्ति के संस्कार करने चाहिए। सच्चे अर्थों मे एक श्रेष्ठ व्यक्ति ही एक सभ्य मनुष्य कहलाने का अधिकारी होता है। तथा उसी से श्रेष्ठ सभ्यता का निर्माण होता है। रामायण मे गर्भाधान , पुंसवन ,जातकर्म तथा नामकरण आदि संस्कारों का उल्लेख मिलता है। जैसे महर्षि वशिष्ठ द्वारा राम लक्ष्मण आदि के नामकरण का वर्णन बाल्मीकीय रामायण के बाल काण्ड मे देखने को मिलता है। हमें अपने प्रिय जनों के नाम सार्थक रखने चाहिए सुंदर एवं श्रेष्ठ शब्दोंका प्रभाव भी सुंदर व श्रेष्ठ होता है। शास्त्रों मे शब्द तथा अर्थ का नित्यसंबंध माना जाता है।

पञ्च यज्ञ परम्परा-

रामायण सभ्यता पञ्च यज्ञ की परम्परा को अनुसरण करती थी , वैदिक सभ्यता मे ब्रह्म यज्ञ , देव यज्ञ (अग्निहोत्र) पितृ यज्ञ अतिथि यज्ञ तथा बलि वैश्व देव यज्ञ को पञ्च महायज्ञ के नाम से जाना जाता है। वैसे यज्ञ शब्द अपने आप मे बहुत विस्तारित अर्थ रखता है जैसे देव पूजा, बड़ों का सम्मान,संगतिकरण यानि मिलकर संगठित होकर चलना तथा दान परोपकार को भावना आदि दिव्य भाव यज्ञ के अंतर्गत समाहित होते है। यह यज्ञ ही समस्त भुवन को एक सूत्र मे बांध कर रखनेवाला परम उपाय एवं साधन है, सर्वविध सुख समृद्धितथा शांति प्रदान करने वाला है। अतः प्रत्येक व्यक्ति को ये पाँच यज्ञ अवश्य करने चाहिए।

अतिथि यज्ञ ---

रामायण मे अतिथि यज्ञ के अनेक उद्दात प्रसंग है , जो हमे गृहागत अतिथि देवता को देव तुल्य मानसम्मान देने की शिक्षा देता है। जब राम लक्ष्मण और सीता जी वन मे पहुंचे तो ऋषि मुनियों ने भी उन्हे विधिवत सत्कार दिया-

अतिथिं पर्णशालायां राघवं संन्यवेश्यन् मङ्गलानि प्रयुञ्जाना मुदा परमया युताः
मूलं पुष्पं फ़लम् सर्वमाश्रमं च महात्मनः ॥

अतिथि यज्ञ सम्पूर्ण मानव जाति मे मानव मात्र मे आत्म दर्शन कर अभ्यास करा कर उस सर्व व्यापक सत्ता के साथ हमारा तादात्म्य स्थापित करता है।

पितृ यज्ञ –

रामायण के मातापिता को देवता के समान सम्मान देने की शिक्षा देता है। राम माता कैकेयी की इच्छा और पिता दशरथ की आज्ञा का पालन कर राज्य छोड़कर वनवास हेतु चले गए। आज की धन लोलुप हमारी सभ्यता मे थोडी सी धनसंपति के लिए पिता के वधकरने मे भी संकोच नहीं करते। राम माता पिता की सेवा मे सदा तत्पर रहते थे। बाल्मीकी जी राम के विषय मे कहते है कि—

धनुर्वेदे च निरतःपितु शुश्रूषणे रतः। बाल्मीकिय रामायण बालकाण्ड18/28

बलिवैश्व यज्ञ –

बलि वैश्व देव प्राणी मात्र के प्रति दया एवं उसके संरक्षण की शिक्षा देता है। आज की मानव सभ्यता अपनी इच्छा पूर्ति के लिए बहुत से पशु पक्षियों एवं कीटपतंगों को मारकर अपने ही विनाश को आमंत्रित कर रहा है। रामयणोक्त बलि वैश्व देव आज की सभ्यता को प्राणी मात्र की रक्षा का संदेश देता है। रामायण मे वर्णित ऋषि मुनि भी नित्य बलि होम आदि यज्ञ करते थे –

बलिहोमार्चितं पुण्यं ब्रह्मघोषनिनादितं .....

इस प्रकार रामायण की सभ्यता का अनुसरण आधुनिक सभ्यता की आध्यात्मिक, आधिदैविक, सामाजिक , पारिवारिक आदि समस्याओ को दूर कर एक श्रेष्ठ सभ्यता के निर्माण मे सहयोग कर सकता है।

पारिवारिक आदर्श –

आज की भोगवादी सभ्यता के कारण पूरे विश्व मे परिवार विघटित हो रहे है। पश्चिमी देशों मे इसकी दुर्दशा हम देख सकते है। रामायण मे पारिवारिक जीवन का एक उच्च आदर्श प्रतिपादित है जिससे हम सभी सुपरिचित है। राम पिता की आज्ञा मानकर साम्राज्य छोड़कर वन मे चले जाते है, सीता राजभवन का ऐश्वर्य त्याग कर पातिव्रत्य धर्म का पालन करने भयंकर अरण्य मे चली जाती है और लक्ष्मण भी भाई व भाभी की सेवा मे राजसुख को त्यागकर उनके अनुगामी बनते है। जब रावण छल से सीता को हर कर ले जाता है और श्रीराम और लक्ष्मण वन में भटक रहे थे, तभी मार्ग में उन्हें आभूषण मिलते हैं, जो माता सीता के थे। मगर लक्ष्मण कहते हैं कि प्रभु मैं इन आभूषणों को नहीं पहचानता। मैं तो केवल पैर के बिछुए को ही पहचानता हूं। वह श्रीराम को बताते हैं कि प्रभु मैंने अपनी माता के दूसरे आभूषणों को देखने की चेष्टा नहीं की केवल मां के चरणों को ही देखा है। लक्ष्मण रूपी देवर जिस घर में रहेगा उस घर का बाल बांका भी नहीं हो सकता, सभी के दिलों से वैर नामक जहर पनपना बंद होकर आपसी प्रेम व भाईचारा बढेगा। दूसरी तरफ भरत राज सत्ता पाकर भी अपने को भाइयो के बिना अधूरा समझता है और त्याग पूर्वक राज्य करते हुये अपने भाइयो के लौटने की प्रतीक्षा करता है। यहाँ कैकेयी एक आदर्श माता हैं। अपने पुत्र राम पर कैकेयी के द्वारा किये गये अन्याय को भुला कर वे कैकेयी के पुत्र भरत पर उतनी ही ममता रखती हैं जितनी कि अपने पुत्र राम पर। हनुमान एक आदर्श भक्त हैं, वे राम की सेवा के लिये अनुचर के समान सदैव तत्पर रहते हैं। शक्तिबाण से मूर्छित लक्ष्मण को उनकी सेवा के कारण ही प्राणदान प्राप्त होता है। इनके पावन चरित्र का स्मरण ही क्षुद्र स्वार्थो के कारण टूटते हमारे दाम्पत्य जीवन एवं परिवारों को बचा सकता है। रामायण हमे सही रास्ते पर ले जाने का संदेश देती है। यह हमें बखूबी सिखाती है कि मां-बाप, पति-पत्नी, भाई-बंधू व राजा-प्रजा के क्या कर्तव्य हैं।

नारी की स्थिति –

किसी भी सभ्यता का मानदंड वहां की नारियो की स्थिति होती है हम तथाकथित सभ्य लोग स्त्रियो के साथ कैसा व्यवहार करते है; उनकी शैक्षणिक, आर्थिक,राजनैतिक स्थिति कैसी है ? इस से उस सभ्यता की श्रेष्ठता तथा निकृष्टता का ज्ञान होता है। रामायण मे वर्णित कौशल्या, सीता, अनसूयादि उदात्त एवं पवित्र चरित्र आज की नारी को बहुत कुछ सीखा सकता है। आज की कुछ नारी पढ़ लिख कर सुंदर वस्त्र पहन कर बाध्य रूप से सभ्य तो हो गयी किन्तु शालीनता पवित्रता त्याग आदि गुणो से रहित होती जा रही है जिसका उसके जीवन तथा उसके परिवार मे शुख शांति का अभाव सा होता दिखाई दे रहा है। नारियो के प्रति सम्मान की तो रामायण मे पराकाष्ठा ही दिखाई देती है एक जटायु नामक पक्षी भी स्त्री का अपमान होते नहीं देख सकता था उसने भी वृद्धहोते हुये अपने प्राणो की चिंता न करते हुये परम शक्तिशाली रावण के साथ युद्ध किया। यह बताता है कि हमे स्त्री के सम्मान की रक्षा करनी चाहिए।

पर्यावरण----

आज की हमारी आधुनिक अंधी विकास परंपरा हमारे पर्यावरण को नष्ट करने मे लगी हुई है। रामायण मे नदी, सरोवर, वन, वृक्ष, वायु तथा समग्र प्रकृति को देवी तुल्य उपासना एवं व्यवहारका वर्णन है। पशु पक्षी के प्रति तो मित्र के समान व्यवहार देखने को मिलता है। क्रोञ्च के वध से करुणाद्र हृदय महर्षि बाल्मीकी के मानस सरोवर से रामायण रूपी काव्य गङ्गा का अवतरण इस भूलोक पर हुआ। अतः एव हमे आज समस्त प्रकृति का संरक्षण एवं आराधन करना चाहिए।

वास्तु एवं विज्ञान ---

रामायण जहां त्यागवादी सभ्यता को दर्शाता है वहींएक श्रेष्ठ मानव सभ्यता के विभिन्न पहलुओ को भी दर्शाता है। वहां अयोध्या के वर्णन मे – श्रेष्ठ नगर निर्माण , मार्ग , उद्यान , दुर्ग , परिखा , विचित्र गृह, मणि निर्मित तोरण ,सुरक्षित सुसज्जित घर , यंत्र तोप आदि अस्त्र शस्त्र, बिना ई धनके पुष्पक विमान आदि का वर्णन प्राप्त होता है। विश्वकर्मा निर्मित लंका पुरी , अलका पुरी, रामसेतु आदि का निर्माण आज कि हमारी सभ्यता के लिए एक उदाहरण है एवं अनुकरणीय है।

निष्कर्ष

यह कहना भी अनुचित नहीं होगा कि सदियों गुजर जाने के बाद भी रामायण वैश्विक सांस्कृतिक चेतना का केन्द्र बिन्दु बनी हुई है। इसकी विश्व व्यापकता अपने आप में कही न कही इस बात का इशारा करती है कि रामायण हमारी सभ्यता, जीवन और संस्कृति का आधार स्तम्भ ही है। जिस प्रकार रामायण के सारे चरित्र अपने अपने धर्म का पालन करते हैं। वैसे ही इन चरित्रों से सीख लेकर मनुष्य अपने जीवन को सार्थक बना सकता है या ये कहा जाये कि रामायण का अनुसरण करके ही आज कि समस्त समस्याओ से मुक्ति पा सकते है अन्य कोई उपाय नहीं है।

संदर्भ

http://anantbodh.blogspot.in/2013/11/blog-post.html